अप्रैल 2017

वर्ष 29
नवम् अंक

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

7 सशंकित जीवन से मुक्ति : विकास का पर्याय

विशेष स्तम्भ

8 समसामयिक सामान्य ज्ञान
16 आर्थिक परिदृश्य
22 राष्ट्रीय परिदृश्य
29 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य
33 क्रीड़ा जगत्
35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य
36 विज्ञान समाचार
37 युवा प्रतिभाएं
39 सारभूत तत्व कोष

लेख

43 आर्थिक लेख—कालेधन पर लगाम *बनाम* कैशलेस व्यवस्था : चुनौतियाँ एवं समाधान
45 द्विपक्षीय सम्बन्ध लेख—भारत-जापान सम्बन्धों के नए आयाम: ऐतिहासिक असैन्य परमाणु समझौता
47 सामयिक लेख—सतलुज-यमुना जल विवाद
48 विज्ञान लेख—कृषि अनुसंधान के बढ़ते कदम—21वीं सदी हेतु : एक महती आवश्यकता
50 कैरियर लेख—एस.बी.आई. में पी.ओ. बनने का अवसर—2017
53 आगामी रेलवे भर्ती बोर्ड, सहायक स्टेशन मास्टर परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न-मनोवैज्ञानिक एवं अभिरुचि परीक्षण

हल प्रश्न-पत्र

56 रेलवे भर्ती बोर्ड (एन.टी.पी.सी.) परीक्षा, 2016
66 मध्य प्रदेश पुलिस आरक्षक (जी.डी.) भर्ती परीक्षा, 2016
74 केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2016 (द्वितीय प्रश्न-पत्र)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम (यू.डी.सी.) परीक्षा, 2016

84 सामान्य जानकारी
87 संख्यात्मक अभियोग्यता
91 सामान्य बुद्धिमत्ता
95 English Language
100 हरियाणा एस.एस.सी. क्लर्क परीक्षा, 2016
105 झारखण्ड संयुक्त स्नातक प्रशिक्षित शिक्षक प्रतियोगिता परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
115 एस.एस.सी. स्टेनोग्राफर ग्रेड 'सी' एवं 'डी' परीक्षा, 2016
127 ज्ञान वृद्धि कीजिए
128 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. —सम्पादक

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

सशंकित जीवन से मुक्ति : विकास का पर्याय

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

हर वक्त विचार चलते ही रहते हैं, ऐसे में क्या करें ? क्यों होता है ऐसा ?

शंका के कारण, अनिश्चितता के कारण, आत्मविश्वास की कमी के कारण, अधैर्य के कारण, आत्मप्रेम व क्षमा के अभाव के कारण, आदतन संस्कारों के कारण, औरों की निगाहों में प्रमाणित होने की इच्छा के कारण, भय आदि संज्ञा के कारण.

उपर्युक्त कारणों को अपने भीतर देखो, जानो. जानो कि आपकी बाधा क्या है ? अपने अन्तरमन को परखो. निरीक्षण करो. खुद ही पता चलेगा कि आप व्यर्थ क्यों सोचते रहते हो. अपने मोह को देखो. मोह-इच्छाएँ ही आपकी काल्पनिक दुनिया के निर्माण का कारण है. अतः खुद की ग्रन्थि को जानो. जितना-जितना खुद की ग्रन्थि को पहचानते जाओगे उतना-उतना उससे मुक्त भी होते जाओगे.

'जानना ही जीतना है.' विराट गुरुजी के इस वाक्य को सदा स्मृति में रखो और धैर्यपूर्वक आत्म निरीक्षण करते रहो.

विचारों का प्रवाह तत्व के अज्ञान के कारण है. जब तक वस्तु तत्व का स्वरूप ज्ञात नहीं हो जाता तब तक ही चिंताएं, भय, आशंकाएं, कल्पनाएं डेरे जमा पाती हैं. इसके लिए वस्तु तत्व का स्वरूप ज्ञान प्राप्त करें.

- जानें कि क्या है हमारा वास्तविक स्वरूप ?
- जीवन में आ रहे सुख-दुःख का निर्माता कौन है ?
- आपकी किस्मत की रचना कौन करता है ?
- अनुकूल वातावरण को कैसे अपनाना है ?
- प्रतिकूलता आए तो उसे कैसे समझना, उससे क्या सीख लेनी ?
- हमारे जीवन का इष्ट-लक्ष्य क्या है ?
- पुण्य-पाप आदि तत्वों का स्वरूप क्या है ?
- खुद को वर्तमान स्वरूप में स्वीकारते जाएं ताकि द्वन्द्व व भयों का निराकरण होता जाएगा.

हमारा वास्तविक स्वरूप प्रेम व ज्ञानमय है. आनन्दमय है ! दुःख-शोक-पीड़ा - सन्ताप - शिकायत- उलाहना- अहं-वासना. ये सब हमारा निज रूप नहीं है. इन्हें अपने भीतर आए विसंक्रमण की तरह जानो और सम्यक् सोच, स्वाध्याय, भक्ति व प्रेम से तुरन्त विसंक्रमण विनाशक का उपयोग करो. चिन्तन के प्रवाह को बदलो.

●●●